International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-10-2020; Accepted: 02-11-2020; Published: 23-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 45-49

सूर्य बाला के उपन्यासों में पारिवारिक स्त्री की संवेदना

एस शोभना

शोध छात्र, हिंदी विभाग मानसागनगोत्री, मैसूर विश्वविधालय मैसूर, कर्नाटक भारत

सार

सूर्यबालाजी के प्रमुख चार उपन्यास सुबह के इंतजार तक, दीक्षांत, मेरे संधि पत्र और यामिनी कथा में परिवारिक स्त्री पात्र की संवेदना का चर्चा। यथार्थ के साथ आदर्श को जोड़ने की प्रयास करती इन स्त्री पत्रों का मूल्यांकन।

मुख्य- शब्द: सूर्यबाला, परिवार, स्त्री-संवेदना।

प्रस्तावना

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।" [1]

जिस घर में नारी की पूजा होती है वहाँ भगवान का निवास होता है जहाँ नारी की निंदा होती है वह घर जल्द ही नष्ट हो जाएगा। यह दुनिया चाहे कितना भी विशाल हो लेकिन हर समाज को बनानेवाली बुनियादी वस्तु है "परिवार"। इसी परिवार से ही समाज बनता है। परिवार की शरुवात नागरिक जीवन की शुरुवात से मानी जाती है। मानव ने अपने सामाजिक जीवन को पुर्ण एवं स्थायी बनाने के लिए जिन संस्थाओं की रचना की, उसमे परिवार का स्थान सर्वोत्तम है। ऐसे परिवार को बनाने और चलाने में नारी की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। बच्चे की मूल अभिवृद्धि परिवार से ही होता है। परिवार ही वह सेतु हे जो शीशु को समाज के साथ जोड़ता है। माँ वह पाठशाला है जो नवजात शीशु को स्नेह, सहयोग, सम्मान, आदर, त्याग, बलिदान,कष्ट सहन,सदाचार, संयम, श्रम आदि अनेक व्याहारिक गुण उस शीशु में भरकर उसे समाज मे रहने और आगे बढने लायक बनाती है। संस्कृति रचाने, बसाने और विकास के लिए मानव के दो रूपों की आवश्यकता होती है, वह है स्त्री और पुरूष। प्राचीन काल से मानव के विकास में पुरुष के साथ स्त्री भी हिस्सेदार रही है। लेकिन समय के साथ नारी की स्थिति में काफी बदलाव आ चुका है। राष्ट्र कवी मैथिली शरण गुप्त जी की यह पंक्तियां स्त्री की स्थिति को स्पष्ट करती है -

"अबला जीवन है, तुम्हारी कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी।" [2]

स्त्री की इस बदलते परिस्तिथियों को सूर्यबालाजी ने अपने उपन्यासों में दर्शित किया है। सूर्यबाला की उपन्यासों में नारी केंद्र में होती है। घर परिवार समाज में जीनेवाली नारी, रिश्तों की जड़ होती है। परिवार और मनुष्यता की बुनियाद होती है नारी पात्र। समकालीन लेखिकाओं में एक उदयीमान व् प्रतिभाशाली साहित्यकार सूर्यबाला है। साहित्य के क्षेत्र में सूर्यबाला का रूचि किशोरावस्था से ही रही है। उन्होंने अपने साहित्य यात्रा का आरंभ छटी कक्षा में कवितओं से किया। समकालीन व्यंग्य एवं कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट भूमिका निभानेवाली सूर्यबालाजी ने साहित्य

1

2

की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है, जैसे कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य, हास्य व्यंग्य आदि। नारी सरोकार से जुड़ी सूर्यबालाजी के साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी समस्याओं का अंकन करना रहा है। इनके कथा साहित्य में चित्रित हर नारी एक परिवार के साथ जुड़ी है। सामान्यतः खाने में नमक की जो भूमिका होती है वही भूमिका नारी की परिवार में होता है। इस लेख में सूर्यबालाजी की चार उपन्यास को केंद्र में रखकर परिवार में नारी की संवेदना की चर्चा प्रस्तुत करती हूँ-

1. सुबह के इंतजार तक
2. दीक्षांत
3. मेरे संधि पत्र
4. यामिनी कथा

"सुबह के इंतजार तक" - एक ऐसी युवती के संघर्षों की गाथा है, जिसका परिवार आर्थिक रूप से इतना समर्थ भी नहीं है कि जवान हो रही बेटी का ब्याह कर सके। अंततः वह कैसे स्वयं को और अपनी परिवार को उबारकर एक सम्मानजनक स्तर पर पहुंचाती है, उसी सब का कारुणिक वर्णन है - सुबह के इंतजार तक । इस उपन्यास में परिवार को आगे बढ़ानेवाली स्त्री माँ या बीवी नहीं बल्कि बहन, दीदी और बेटी के रूप में हमारे सामने उबरकर आती है **"मनु"** जो एक पढ़ी लिखी, साहसी और जिद्दी नारी है। जो अपनी भाई को डॉक्टर बनाने के लिए जी तोड़ कोशिश करती है। और खुद को त्याग की आग के हवाले करती है। सामान्यतः घर की बेटियां दूसरे घर की सम्पति होती है, लेकिन यहाँ मनु अपनी जिंदगी पूरी तरह नष्ट होने के बावजूद वह हिम्मत नहीं हारती है। अपने परिवार के कम से कम एक सदस्य को कामियाब बनाने के लिए वह घर छोड़कर अपने भई बुलु के साथ भाग जाती है। मनु को पता है कि यदि गरीबों का जिंदगी में आगे बढ़ने का एक ही सीढ़ी है तो वह है शिक्षा। इसीलिए वह भी पढ़ाई करके अध्यापिका बनती है। अपने भाई जो मैकेनिक का काम करता था उसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कराके उसे अच्छी तरह से पढ़ाती है। गरीब घर में पैदा होकर मनु भी आम लड़कियों की तरह ही अपना घर, परिवार और बच्चों की सपना देखती है और अपने घर की बोझ को कम कराने के लिए ही अपने मामी के साथ चलती है। लेकिन उसके साथ अत्याचार होता और उसके खिलाफ आवाज उठाने की लिए भी कोई उसका सहारे नहीं देते है। अंत में पिता के साथ घर वापस आ जाती है और घर में सभी उसके साथ हुए अन्याय का मातम मनाते है। कोइ भी उसके दुख और दर्द को समझने या दूर करने की कोशिश नहीं करते। ऐसी हालत में वह अपने भाई बुलू के साथ घर छोड़कर भाग जाती, दूसरे शहर में अपने किस्मत को तलाशती हुई। इतने सारे सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को झेलते हुए वह अपने भाई को डॉक्टर बनाती है। और उसके मर जाने के बाद भी अपने भाई को हिम्मत बांधती हुई उसको पत्र में लिकखर रखती है - "सुन, तू यह पत्र पढ़ते हुए बार-बार सोचना कि मेरा जीवन अवधि में छोटा भले रहा हो, पर पूर्ण था- जीत की उपलब्धियों से पूर्ण! तू बता, बुलू, हारी कहीं तेरी दीदी? झुकी कहीं तेरी दीदी? पूरा सम्मान, अपरिमित प्यार और संतोष से अपना घड़ा भरकर इस पनघट से चली जा रही हूँ। अपनी पीड़ा भूल जाना महामन्त्र है। तेरी दीदी बहुत बहादुर से जिंदगी जी चुकी है। उसने सब कुछ स्वीकार लिया। इसीसे शायद समाज भी उसे सहजभाव से स्वीकारता चला गया। यह मेरे विद्रोह की पिटिका थी, मेरा दृढ़ था।" [3]

वैसे "दीक्षांत" उपन्यास की प्रधान स्त्री पात्र 'कुंती' हैं। वह पढ़ी-लिखी है और एक आज्ञाकारी गृहणी है। कुंती अपने पति और बच्चों से बेहद प्यार करती है। अपने परिवार के लिए अपने को पूरी तरह न्योछावर करती है। अत्यधिक आर्थिक समस्याओं से जूझते हए भी उसने कभी अपने पति को ईमानदारी की रास्ता से भटकने या लम्बे हाथ मारने के लिए नहीं उकसाया। कुंती एक स्वाभिमान नारी के रूप में हमारे सामने आती है जो अपने परिवार और बच्चों -विनय और विमल की जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाती है। स्वभाव से शांत, सरल, सुस्वाभावी और सुहासिनी है। अपने परिवार के निर्माण की छोटे-छोटे प्रसंगों के कारण गंभीर हो जाती

3

है। यहाँ कुंती एक आदर्श ग्रहणी के रुप मे हमारे सामने आती है। अपने पति, बच्चे और घर ही उसकी पुरी दुनिया है। लेकिन कभी लगता है कि पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी उसमें वह साहस नहीं है जो हमें मनू में मिलता है। कुंती परिस्थितियों को स्वीकारती है बल्कि उससे लड़ती नहीं है। लेकिन हमारे समाज में अधिकतर गृहणियाँ का यही हाल है परिस्थितियों से लड़ने से ज्यादा वह परिस्थितियों को स्वीकार कर लेती और अपने नसीब को दोषी ठहराती है। इस उपन्यास में आखिर उसके पति के मर जाने के बाद उसके सामने कई सारे प्रश्न आते है उन सभी प्रश्नों का हल तलाशते वह पाठकों के सामने पेश आती है। 'दीक्षांत' उपन्यास में 'कुंती' का चित्रण एक यथार्थ भारतीय गृहणी के रूप में हुआ हैं।

"मेरे संधि पत्र" उपन्यास के प्रधान स्त्री पात्र है - शिवा। सारी कथा आरंभ से अंत तक शिवा से संबंधित है। पढ़ी लिखी नारी होने के कारण उसका चित्रण उपन्यास में विविध रूपों में आया है। जैसे मां, विधवा, प्रेमिका,पत्नी, बहू और दादी आदि। बचपन से ही बुद्धिमान पढ़ाई में अव्वल के साथ-साथ खेल-कूद, नाटक गीत गाने में भी शौक रखने वाले बहुत ही प्रतिभाशाली लड़की है। गरीब घर में पैदा होने के एक मात्र कुसुर और अपने घर की आर्थिक स्थिति को ठीक कराने के लिए अपनी माँ के ऊपर कम से कम एक बोझ को हलका करने के लिए वह अपने आप को कुरबान देने के लिए तैयार होती है। इसी कारण वह एक अनमेल विवाह का शिकार बन जाती हैं। अपनी शादी के छः साल बाद माँ बनती हैं। अपने सौतेले बेटियों को भी माँ की ममता में कभी कुछ कमी नहीं रखती हैं। घर में सभी का ख्याल रखती हैं। दोनों बेटियों को पढ़ाई के लिए विदेश भेजती हैं। जो- जो सपना उसने देखा था उसे साकार करने के माध्यम के रूप में अपने बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। अपने बेटियों को विदेश भेजते समय इतनी सारी ममता भरी हिदायतें पत्रों के माध्यम से देती हैं। उसके पत्रों में एक माँ की ममता और अपने से कई मीलों दूर रह रहीं बेटी के प्रति उसकी चिंता ही उसमें लक्षित होती है। शिवा एक आदर्श गृहणी का सारा कर्तव्य निभाती हैं । पढ़ी-लिखी होने के कारण अपने सोच विचार में आधुनिक भी हैं और साथ ही वह अपने धर्म- संस्कार, परंपरा और मर्यादा का पालन भी करती हैं। उसके पति श्री रॉय साहब की मृत्यु के बाद ज्यादातर दुखी रहती है और वह बहुत ही छोटी सी उम्र में विधवा बन जाती हैं। उसकी सौतेली बेटियाँ उसके बहन जैसी लगती हैं। इसीलिए उसके तीनों बेटियां चाहते हैं कि शिवा का पुनर्विवाह रत्नेश माथुर के साथ करा दे। रत्नेश माथुर भी शिवा को अपनाकर उसके दुख को दूर कराना चाहते हैं। संस्कृति से ओतप्रोत, अपने समाज में अपने परिवार के इज्जत को अत्याधिक माननेवाली शिवा को यह बिल्कुल मान्य नहीं है। नतीजा वह अपनी जिंदगी को साहस और धैर्य के साथ और अपने पति की बेपनाह प्यार के स्मरण में ही जीने का फैसला लेती हैं। आधुनिकता और परंपरा को निभाते अपनी बेटियों के लिए माता और पिता का फर्ज निभाते जीने का निर्णय लेती हैं।

“यामिनी कथा” उपन्यास की नायिका यामिनी है। वह पढ़ी लिखी, मध्यवर्गीय, आधुनिक विचारों वाली घरेलू काम भी करनेवाली नारी है। यामिनी का विविध रूपों में चित्रित करके, लेखिका ने नारी के बदलते परिवेश को दिखाया है। यामिनी का विवाह - विश्वास के साथ मैट्रिमोनियल कालम के जरिये होता है। यामिनी अपने पति से बेपनाह प्यार करती और उससे भी उसी प्यार की ख्वाहिश ही रखती है लेकिन उसको वह प्यार नही मिलता। क्योंकि विशवास पेशे में ही नहीं बल्कि सोच-विचार में भी जहाजी ही था। उसने यामिनी को सब कुछ दिया लेकिन प्यार नहीं जिसके लिए वह तरसती थी, क्योंकि उसको प्यार जैसे बातों पर विशवास ही नहीं था। जब यामिनी की गोद मे पुतुलू खेलने लगता है तब उसको अपनी बच्चे के साथ साथ अपने पति के प्यार को भी वापस पाने की आशा झलकने लगता है। लेकिन किस्मत, उसके साथ दूसरा खेल खेलता है। विशवास को यामिनी पूरी तरह से प्राप्त करती है, बस उसको हमेशा-हमेशा खोने के लिए। विशवास कहता है " तुम्हारे पास

लौटा भी तो कंगाल बनकर ना" [4]। पाँच वर्ष कैंसर की लंबी बीमारी के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। अपने बेटे पुतुलु के साथ अक्सर पेंशन और पालिसी के सिलसिले में बैंक जाती थी, वहीं निखिल से मुलाकात होता है। निखिल भी यामिनी से प्यार करने लगता है और खुलकर एक दिन उससे विवाह का प्रस्ताव भी रखता है। अंततः यामिनी के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से एक सहारे की आवश्यकता थी, वह सभी प्रकार की जानकारी को देकर, उसके साथ विवाह करती है। पुतुलू भी इस विवाह के लिए अपनी पूरी सहमति देता है। लेकिन विवाह के बाद वह न ही निकील के साथ पूरी तरह नवोढ़ा पत्नी बन पाती है और पुतुलू कि नज़रों से बच पाती। पुतुलू में वह विशवास को देखती है और दूसरे बच्चे को हमेशा के लिए टालना चाहती थी। फिर भी चुनचुन का जन्म शादी के पहले साल में ही होता है। अपने ही घर में वह अकेली हो जाती है।अपनी जिंदगी के आरोपों से बच नहीं पाती है। पुतुलू की छाया में विशवास को देखकर और घबरा जाती हैं। अंत मे पुतुलू अपने पिता का ही पेशे को चुनता है यामिनी चाहकर भी उसे रोक नहीं पाती है। लेकिन आखिर जाते समय पुतुलू निखिल को पपा के रूप में स्वीकारता और उन दोनों के रिश्ते में समझदारी पनपती है। चुनचुन से भी प्यार करने लगता है। उपन्यास के अंत मे पुतुलू ट्रैन में चले जाता है यामिनी अपनी आसूँ को रोक नहीं पाती अपने एक टुकड़ा से हमेशा के लिए बिछड़ती है।सूर्यबाला जी ने यामिनी का चित्रण उपन्यास में एक जिम्मेदार औरत, दायित्व निभानेवाली माँ, नवोढ़ा पत्नी आदि रूपों में किया है। पुतुलु और चुनचुन के लिए विभक्त माँ और दूसरी विभक्त पत्नी है। एक तरफ से साहसी और आधुनिक नारी भी जिसने अपने पूरी जिंदगी में किसी भी परिवेश में अपने कर्तव्य से नहीं हटी।

उपसंहार

इस तरह सूर्यबाला जी के उपन्यास में चित्रित मनु, कुंती, शिवा, यामिनी वह परिस्तिथि के साथ सँघर्ष करके नया रास्ता तलाशती है। सूर्यबाला की नायिकाएं हर घर की अपनी स्त्री है जो अपनी परिवार और समाज में उपेक्षित और अपमान के कड़वे घूंट पीकर भी अपने अस्तित्व को बनाए रखती हैं । इन नायिकाएं अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखते हैं बिना किसी लड़ाई झगड़े की, बिना किसी शोर-शराबे के, बिना किसी वाद विवाद किए, अपने काम हमेशा करते रहते हैं। अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं और अपने परिवार के प्रति समर्पित रहती हैं। उनके लिए अपना कर्तव्य चाहे वह घर के अंदर हो या घर के बाहर अपना कर्तव्य ही उनकी प्रथम पूजा है । परिश्रम करने से कभी डरती या पीछे नहीं हटती हैं । जीवन में समझौता करके हारती नहीं बल्कि नए ढंग से जीने की प्रेरणा देती है। परिवार की भूमिका पर शुरू होनेवाली इन नारियों की यात्रा परिवार के साथ ही चलकर और अंततः परिवार में ही खत्म होता है। सूर्यबालाजी का लेखन आज की नारी के इर्द-गिर्द ही रचाया गया है। आज की नारी जो उनकी नायिका है उनकी खास विशेषता यह है कि वह चाहे किसी भी वर्ग की क्यों न हो, पढ़ी-लिखी या अनपढ़, शहरी या गाँवरू, गृहणी या नौकरी पेशा, वे किसी भी परिस्थिति में उखाड़-पछाड़ करना नहीं जानती। वे विवेक सम्मत व्यवहार करती हैं।वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप कार्य करने में विशवास रखती है और अपने दायित्वों के प्रति पूर्ण समर्पण करना भी जानती है और कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के बीच समझौता कराके आगे अग्रसर करना भी भली-भांति जानती है। आज की नारी का स्वरूप जो सूर्यबालाजी ने अपने लेखन में चित्रित किया है वो विद्रोह के स्थान पर अपने विवेक पर अधिक विशवास करती है। इन नायिकाओं ने अपने जिंदगी की यथार्थ में आदर्श को तलाशती दिखायी देती है। आज हमारे समाज में कई सारे मनु, कुंती, शिवा और यामिनी तो मिलती ही है। जिस तरह माँ की भूख अपने सारे बच्चों की भूख मिट जाने के बाद ही मिटती है उसी तरह अगर परिवार में स्त्री खुश और कामियाब हो जाये तो परिवार के हर सदस्य कामियाब हो जाता है और परिवार कामियाब होने से समाज भी कामियाब बनती है।

4

संदर्भ सूची

1. । मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 46
2. ।मैथिलीशरण गुप्त, यशोधरा
3. ।सुबह के इंतजार में,सूर्यबाला पृ.133
4. ।सूर्यबाला, यामिनी कथा, पृ.51